सामान्य टिप्पणियां :

क्या ऊपर बनाए गए तथ्य और आँकड़े पाठकों के मनों मे कुछ उत्सुकता पैदा नहीं करते और इस गम्भीर विषय के बारे में विचार करने को प्रेरित नहीं करते? क्या आप इस सूचना को अधिक से अधिक लोगों तक पहुँचाने के बारे में विचार नहीं करेंगे? इस पत्रक का लक्ष्य जाति, पंथ या समुदाय के भेदभाव के बिना सब भारतिय नागरिकों को सच्चाइयों की जानकारी देना है और उन्हें इस बात के लिए प्रेरित करना है ताकि वे सोचें कि भारत की अति प्राचिन सभ्यता को कैसे बचाएं और कैसे उसकी रक्षा करें। यह ऐसी सभ्यता है जिसके बारे में स्वामी विवेकानन्द ने 11 सितम्बर 1893 के दिन शिकागो में बोला था : -

"हमने विश्व को सहनशीलता और स्वीकार्यता, इन दोनों की ही शिक्षा दी है"

यह फोरम आपके मुल्यवान् मार्गदर्शन, बौद्धिक परामर्श आर सक्रिय सहयोग की अपेक्षा रखता है, आप कृपया किसी भी रूप में जैसा उचित समझें, देने में संकोच न करें।

इसे **"पेट्रियोट्स फोरम"** की ओर परिचालित किया गया है जो कि एक स्वयंसेवी अध्ययन दल है। इसमे सेवानिवृत्त सरकारी अधिकारी, सामाजिक-वैज्ञानिक, शिक्षाविद और प्रचार माध्यमों से संबधित कुछ बुद्धिजीवी और प्राइवेट फर्मो के कुछ प्रबंधकीय स्तर के मनीषी शामिल हैं। यह गैर-राजनीतिक संगठन है और इसका किसी जाति या समुदाय के प्रति काई दुराग्रह नही है।

संपर्क सूत्र :

प्रधान - डी. सी. नाथ, आइ.पी.एस (से. नि.)
दूरभाष : - 26175790, 26256123, 9811995693
ई-मेल :dcnath@patriotsforum.org

उपप्रधान - ले.जन. (से. नि.) प्रेम सागर
दूरभाष : - 26169423, 26256123, 9899078687
ई-मेल : premsagar@patriotsforum.org

महासचिव - राम कुमार ओहरी आइ.पी.एस (से. नि.)
दूरभाष : - 26142277, 9810279264
ई-मेल : rkohri@patriotsforum.org

मानद कोषाध्यक्ष - देवेन्द्र कुमार मित्तल
दूरभाष : - 26893409, 9313139435
ई-मेल : dkmittal@patriotsforum.org

जनसंख्या के परिवर्तनों का सामाजिक-राजनीतिक दुष्प्रभाव

किसी देश के भाग्य के निर्माण में जनसांख्यिकी की भूमिका बहुत महत्वपूर्ण होती है और जनतंत्र में तो इसका महत्व और भी बढ़ जाता है। भारत में तो देश की जनतांत्रिक प्रकृति और परंपरा के होते हुए यह बिल्कुल स्पष्ट दिखाई देता है। इसी प्रकार किसी सभ्यता की रचना में प्रायः पंथ की भी भूमिका महत्वपूर्ण होती है। भारतीय सभ्यता के संबंध में तो पंथ का प्रभाव और भी अधिक हुआ है जैसा कि हमारे संतों जैसे - स्वामी विवेकानन्द या महर्षि अरविंद ने इस तथ्य को भलीभांति उजागर किया है। हम जानते हैं कि भारतीय सभ्यता 'सर्वधर्म समन्वय' के फलस्वरूप विकसित हई है, तथापि इस देश की संस्कृति को आकार देने में हिन्दुत्व की भूमिका ही निर्विवाद रुप से प्रधान रही है। देश के बहुसंख्यक समुदाय की धार्मिक संरचना में बड़े परिवर्तन हुए हैं, जो कि भारत सरकार की जनगणना - 2001 की रिपोर्ट की विवरणी 7 से स्पष्ट हुए हैं और जो पेशेवर जनसंख्या - विश्लेषकों द्वारा भी प्रकाश में लाए गए हैं। उनके अनुसार ये परिवर्तन भारत की विविधताओं, पंथनिरपेक्षता और अत्यंत प्राचीन बहुदेववादी समाज पर बहुत बुरा प्रभाव डालने वाले हैं। इसके साथ-साथ पूरी भारतीय सभ्यता की अभिन्नता पर भी दुष्प्रभाव डालने वाले हैं। यहाँ चौंकाने वाले कुछ तथ्य दिए गए हैं :

जनसंख्या की वृद्धि

1. दश वर्षीय वृद्धि दर : जनगणना 2001 भारत सरकार

		1991	2001
हिन्दू	-	23%	20%
मुसलमान	-	34.5%	36%*

क. स्वाधीनता के पश्चात् सभी हिन्दू धर्मावलम्बियों (हिन्दु, सिख, बौद्ध, जैन) और इसाइयों की भी जनसंख्या प्रतिशत मे क्रमिक गिरावट दिखाइ देती है।

ख. * बाद में इस आँकड़े को 20% दिखाया गया है/कम किया गया है। ऐसा असम और जम्मु-कश्मीर राज्यों में रहने वाले 3.6 करोड़ भारतीयों को शामिल न करके किया गया है।

2. जनगणना - 2001 (पंथवार आँकड़ो की रिपोर्ट) पृ. 62 की विवरणी - 7 में 0 से 6 वर्ष के मुसलमान बच्चों के आयु समूह की संख्या हिन्दुओं की तुलना में 21% अधिक थी (टिप्पणी : यदि मुसलमानों द्वारा परिवार नियोजन को अपनाने में हिन्दुओं की तुलना में 25% कम का हिसाब लगाया जाए तो उन बच्चो की संख्या 21% और बढ़ जाएगी अर्थात् 42% हो जाएगी, ऐसा तब होगा जब 2011 और 2016 ईसवी के बीच में वे संतान उत्पत्ति के योग्य हो

जाएंगे और यह स्थिति अगले 30-40 वर्षो तक बनी रहेगी। इसका प्रभाव देश में मुसलमानों की जनसंख्या में वृद्धि के रूप में होगा)।

3. राष्ट्रीय परिवार स्वास्थ्य सर्वेक्षण-2 (1998-1999) के अनुसार प्रत्येक मुसलमान स्त्री ने हिन्दू स्त्री की तुलना में औसतन 1.1 संतान अधिक उत्पन्न की।

4. दिल्ली में मुसलमानों की जनसंख्या 1961 और 2000 ईसवी के बीच 10.5 गुना बढ़ी हौ अर्थात् 1961 में वे 1,55,453 थे जो बढ़कर 2001 में 16,23,520 हो गए।

5. हरियाणा में मुसलमानों की जनसंख्या पिछले 30 वर्षो में तीन गुना बढ़ी है अर्थात् 1971 में वे 4,50,723 थे जो 2001 ई. में बढ़कर 12,22,916 हो गए।

6. पश्चिम बंगाल के कोलकाता जिले में दस वर्षीय हिन्दु वृद्धि दर 0.7% थी जबकि मुसलमानों की वृद्धि दर 18% थी। कोलकाता जिले में हिन्दु स्त्रियां केवल एक सन्तान उत्पन्न करती हैं, जबकि किसी भी जनसंख्या की स्थिरता हेतु वृद्धि दर 2.1% होनी चाहिये।

7. असम के बोंगाइगाँव जिले में जो कि देश के सामरिक महत्व के क्षेत्र में है, हिन्दुओं की दस वर्षीय वृद्धि दर 2.3% थी जबकि मुसलमानों की 31.8% थी।

8. स्वाधीनता के पश्चात् भारत के उत्तर-पूर्वाचल में जनसंख्या के जो शोचनीय परिवर्तन हुए हैं, वे तो अब इतिहास की बातें हैं, जिन्हें प्रायः जनसंख्या का आक्रमण ही कहा जा सकता है।

9. विश्व की जनसंख्या की तुलना में मुसलमानों की जनसंख्या का प्रतिशत

1900	**1993**	**2004**	**2025** (संभावित)
12%	18%	20%	30%

(स्त्रोत : सेम्युअल हंटिंग्टन के द्वारा लिखित, दि डिक्लाइन ऑफ दि वेस्ट)

10. मुस्लिम देशौं को छोड़कर विश्व के अन्य सभी देशो में 1972 ईसवी से लगाकर संतानोत्पत्ति का स्तर आधे से भी कम हो गया है यानि तेज़ी से गिरा है। सन् 1972 में प्रति स्त्री के 6 बच्चे थे जो गिरकर 1990 में 2.9 मात्र रह गए। सन् 2002 की संयुक्त राष्ट्र जनसंख्या रिपोर्ट के अनुसार युरोप की संतानोत्पत्ति दर 2.1 के सामान्य स्तर से बहुत नीचे है। इससे युरेबिया का भावी चित्र सामने आता है।

11. स्वाधीनता से पहले हिन्दुओं की तुलना में मुसलमानों की संतानोत्पत्ति दर लगभग 10% अधिक थी जो अब हिन्दुओं की अपेक्षा 25 से 30 प्रतिशत अधिक है। **(पी. एन. मारी भट्ट और ए. जे. फ़्रांसिस जेवियर की पुस्तक 'रोल आफ रिलीजन इन फर्टिलिटि डिक्लाइन : दि केस औफ इंडियन मुस्लिम', इक्नॉमिक एन्ड पॉलिटकल वीकली, 29 जनवरी 2005)**

12. **मानव विकास सूचकांक**

इस सारे विवरण को निम्नलिखित के साथ पढ़ना अधिक सार्थक होगा : - विश्व स्तर पर मानव विकास के सूचकांक के तीन आधार मान्य हैं, एक है शिशुओं और बच्चों की मृत्यु दर, दुसरा शहरीकरण के स्तर और तीसरा है जन्म के समय पर संभावित आयु आदि। इन तीनों में भारत में हिन्दू समाज मुसलमानों की तुलना में बहुत पीछे है। हिन्दुओं की असामायिक मृत्यु दर भी अधिक है। इसके बारे में तथ्य नीचे दिए गए हैं।

भारत में हिन्दुओं और मुसलमानों के शिशुओं और बच्चों की मृत्यु के आकड़े निम्नलिखित हैं।

क **(प्रति 1000 जीवित जन्मे)**

स्त्रोत	**शिशु मृत्यु दर (जन्म से १ वर्ष)**		**बच्चों की मृत्यु दर (आयु १ से ५ वर्ष)**	
	हिन्दू	**मुसलमान**	**हिन्दू**	**मुसलमान**
जनगणना - 1991	74	68	97	91
राष्ट्रीय परिवार स्वास्थ्य सर्वेक्षण - 1(1992-93)	90	77	124	106
राष्ट्रीय परिवार स्वास्थ्य सर्वेक्षण - 2 (1998-99)	77	59	107	93

ख **<u>शहरीकरण का स्तर</u>**

जनगणना - 2001 (पंथवार आंकड़ों की रिपोर्ट)

शहरी क्षेत्र में हिन्दू	**शहरी क्षेत्र में मुस्लिम**
26%	36%

ग **<u>जन्म के समय पर संभावित आयु</u>**
(पी.एन.मारी भट्ट और ए.जे फ्रांसिस जेवियर की गणना के अनुसार आयु विशिष्ट मृत्यु दर का औसत निकाल कर)

हिन्दू	**मुसलमान**
61.4 वर्ष	**62.6 वर्ष**